RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्री–सशक्तिकरण की भावना

मीनाक्षी

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, नारी–सशक्तिकरण.

ABSTRACT

किसी भी रचनाकार के लिए उसकी कृति अपनी संतान की भाँति होती है। जिस प्रकार पिता अपनी संतान का नामकरण बहुत सोच–समझकर पण्डितों से पूछकर करता है, उसी प्रकार रचनाकार भी अपनी रचना का नामकरण अत्यधिक चिंतन के बाद ही करता है। वह अपनी रचना का नामकरण कुछ ऐसा करना चाहता है, जिससे की पाठक को उसके नाममात्र से रचना की आतंरिक पृष्ठभूमि का बहुत अधिक ज्ञान नही, तो अनुभव अवश्य हो जाए। प्रसाद जी ने नाटक का नाम 'ध्रुवस्वामिनी' के नाम पर करके नारी सशक्तिकरण की ओर सराहनीय काम किया है। युग–युग से नारी पुरूष द्वारा प्रताड़ित, उपेक्षित और अपमानित होती आ रही है, पर अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी है। प्रस्तुत शोध आलेख में यही बताने का प्रयास किया गया है कि नारी तब तक उपहार की वस्तु ही बनी रहेगी, जब तक वह स्वयं इसका विरोध नहीं करेगी।

प्रस्तावना –

समाज के दो पहलू स्त्री और पुरूष जो एक दूसरे के पूरक है। दोनों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है। स्त्री–पुरूष एक ही गाड़ी के दो पहिऐ के समान है। यदि एक का सन्तुलन बिगड़ता है तो दूसरे का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगता है और जीवन रूपी गाड़ी डगमगाने लगती है। इसके बाद भी समाज में महिला को वो स्थान नही मिला जो मिलना चाहिए था। इसी पक्षपात रवैये ने नारी को आन्दोलन करने के लिए मजबूर किया है। जो आज समाज के एक बहुत ही अहम् मुददे नारी–सशक्तिकरण के रूप में हमारे सामने है। स्त्री विमर्श वस्तुतः स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। डॉ. संदीप रणभिरकर के शब्दों में, "स्त्री विमर्श स्वयं स्त्री के बारे में सोचने और निर्णय करने का विमर्श है। सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री–विमर्श को जन्म दिया है।"[1] हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श की गूँज छायावाद में सुनाई दी। उदाहरण के तौर पर महादेवी वर्मा जी की 'श्रृखँला की कड़िया' को ले सकते है। जिसमें नारी मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। वर्मा जी कहती है, "हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। हमें केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्त्व चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं परन्तु जिसके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नही बन सकेगी।"[2] आदिकाल से ही नारी की दशा दयनीय रही है। जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नही पाती थी। स्त्रियों की दशा देखकर विवेकानंद कहते है, – "स्त्रियो की अवस्था सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नही है। पक्षी के लिए एक पंख से उडना संभव नही है।"[3]

जयशंकर प्रसाद जी के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' को मूलतः स्त्री समस्याओं से जोड़कर देखा जाता है। अतः स्वाभाविक हैं कि लेखक स्त्री समस्याओं का निराकरण स्त्री को सशक्त रूप में पेश करके करता है, ताकि समाज में स्त्री सशक्तिकरण की भावना जोरदार तरीके से उठाई जा सकें। इस नाटक में मूलतः तीन स्त्री पात्र है – ध्रुवस्वामिनी, मन्दाकिनी, कोमा। इन तीनों ही पात्रों को प्रसाद जी ने अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत कर अपनी नारी सशक्तिकरण की भावना का परिचय दिया है –

1– ध्रुवस्वामिनी –

ध्रुवस्वामिनी नाटक की सर्वाधिक प्रमुख पात्र है। सम्पूर्ण नाटक उसी के चरित्र के इर्द–गिर्द घूमता है। यह चन्द्रगुप्त से प्रेम करती हैं लेकिन उसका विवाह छलपूर्वक अयोग्य रामगुप्त से हो जाता है। ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त के अन्याय व अत्याचार का डटकर विरोध करती है – "पुरूषों ने स्त्रियों को अपनी पशु–सम्पत्ति समझकर इन पर अत्याचार करने का जो अभ्यास बना लिया है वह मेरे साथ नही चलेगा।"[4] ध्रुवस्वामिनी का आत्म सम्मान की रक्षिका रूप भी नाटक में देखने को मिलता है। जब रामगुप्त उसका घोर अपमान करता है तो उसका आत्मसम्मान जाग्रत हो जाता है तथा वह स्वयं अपने आत्मसम्मान की रक्षा का भार वहन करने को तत्पर हो जाती है – "निर्लज्ज! मधप! क्लीव! ओह, तो मेरा कोई रक्षक नहीं, अपनी रक्षा मैं स्वयं करूँगी। मैं उपहार में देने की कोई वस्तु शीतलमणी नहीं हूँ। मुझमें रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्मसम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूँगी।"[5] ध्रुवस्वामिनी नाटक में अनेक स्थलों पर अपने तर्कशील होने का प्रमाण भी देती है। वह रामगुप्त से तर्क करते हुए कहती है – "महाराज! किंतु मैं भी यह जानना चाहती हूँ कि गुप्त साम्राज्य क्या स्त्री संप्रदान से ही बढ़ा है।"[6] क्योंकि रामगुप्त शकराज के प्रस्ताव को मानने की कोशिश कर रहा था। इसी तरह का विचार हमें यशपाल जी के उपन्यास में देखने को मिलता है – "समाजवादी विचारधारा के अनुसार स्त्री को सम्पति नहीं समझा जा सकता। उसका दान नहीं

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दिया जा सकता। उसे खरीदा और बेचा नहीं जा सकता। वह किसी प्रकार की सम्पति नहीं, स्वतंत्र आत्मनिर्भर व्यक्ति है।"[7]

ध्रुवस्वामिनी जीवन संघर्ष से घबराती नहीं है, वह पुरोहित को भी फटकारती है – "रोष? हाँ मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास धर्म के नाम पर स्त्री की आत्मीयता की यह पैशाचिक परीक्षा मुझ से बलपूर्वक ली गई है।, पुरोहित! तुमने मेरा जो राक्षस–विवाह कराया है – उनका उत्सव भी कितना सुंदर है।"[8] ध्रुवस्वामिनी न केवल स्वंय विरोध और विद्रोह का स्वर प्रकट करती है, अपितु चन्द्रगुप्त की भी प्रेरक बनती है, "कुमार! मैं कहती हूँ कि तुम प्रतिवाद करो। किस अपराध के लिए यह दण्ड ग्रहण कर रहे हो?..... झटक दो इन लौह–श्रृखँलाओं को। यह मिथ्या ढोंग कोई नहीं सहेगा – तुम्हारा क्रुद्ध दुर्दैव भी नहीं।"[9] 'अन्तर्वषी' नामक उपन्यास में सारिका और वाना जैसी नारियाँ भी इसी सशक्त रूप में चित्रित हुई है। सारिका का कथन दृष्टव्य है – "जब तू अपने अन्दर से उठती एक पुकार सुनोगी तब पंख फैलाकर उड़ने की शक्ति हमें स्वंय आ जाऐगी।"[10]

2– मंदाकिनी –

मंदाकिनी नाटक में एक काल्पनिक पात्र है नाटककार ने उसे रामगुप्त व चन्द्रगुप्त की बहन के रूप में चित्रित किया है। नाटक में यह स्वच्छंद गुप्त बाला जहाँ–जहाँ भी उपस्थित होती है, अपने विरोधी स्वर से रामगुप्त को हतप्रभ तथा ध्रुवस्वामिनी व चन्द्रग्रुप्त को उत्साहित एवं प्रेरित करती है। वह निर्भिक बाला है, बोलते समय किसी का भय नही खाती। उसके विचार स्वछंद है वह साहस से ओत–प्रोत है, रामगुप्त जब उसे डराने की कोशिश करता है तो वह कहती है – "राजा का भय मन्दा का गला नही घोट सकता। तुम लोगों में यदि कुछ भी बुद्धि होती, तो इस अपनी कुल मर्यादा–नारी को शत्रु के दुर्ग में यो न भेजते। भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करते ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है। किंतु लोगों की दस्यु वृति ने उन्हें लूटा है।"[11] मंदाकिनी निर्भिक और देशभक्त होने के साथ–साथ प्रेरणादायिनी भी है। वह ध्रुवस्वामिनी व चन्द्रगुप्त दोनों को ही अपने कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित करती है। "वास्तविक प्रेरणा और कर्तव्य की पुकार एकत्र करके सोचिए तो कुमार, कि अब आपको क्या करना चाहिए?"[12] वह गीत गाकर सामंत कुमारों को भी शकराज से युद्ध करने हेतु प्रेरित करती है– "पैरो के नीचे जल घर हो, बिजली से उनका खेल चले, संकीर्ण कगारों के नीचे, शत–शत झरने बेमेल चले। सन्नाटे में हो विकल पवन, पादप निज, पद हो चूम रहे, तब भी गिरि पथ का अथक पथिक, ऊपर ऊँचे सब झेल चले।[13]

3–कोमा –

कोमा का आगमन नाटक के द्वितीय अंक में होता है। वह नाटक की काल्पनिक पात्र है। वह आचार्य मिहिर देव की पालिता पुत्री है तथा शकराज की प्रेयसी है। वह तर्कशील व दार्शनिक युवती है। जब शकराज उससे पूछता है कि क्या नई रानी का आना उसे अच्छा नहीं लगातो निर्विकार भाव से वह कहती है, – "संसार में बहुत सी बातें बिना अच्छी हुए भी अच्छी लगती है। और बहुत सी अच्छी भी बातें बुरी मालूम पड़ती है।"[14] अपने तमाम मानवीय गुणों के साथ ही कोमा नारी मर्यादा की भी रक्षक है। उसे यह बात बिल्कुल पसंद नही है कि शकराज अपने, प्रतिशोध की आग को ठंडा करने के लिए ध्रुवस्वामिनी के स्त्रीत्व को भंग करे, उसे अपनी विलास सहचरी बनाए। पहले वह शकराज को समझाती है – "मेरे राजा! आज तुम एक स्त्री को अपने पति से विच्छिन कराकर अपने गर्व की तृप्ति के लिए कैसा अनर्थ कर रहे हो?"[15] परन्तु जब वह इस कार्य को अपना राजनीतिक प्रतिशोध कहता है तो वह दृढता से उसे कहती है, – "किंतु राजनीति का प्रतिशोध क्या एक नारी को कुचले बिना नहीं हो सकता।"[16] इसी तरह जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' में भी नारी पात्र मृणाल का समाज के प्रति विद्रोह दिखाया गया है, पति द्वारा निष्काषित हो जाने परअपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रमोद से मृणाल का यह कथन दृष्टव है – "मैं स्त्री धर्म को पतिव्रत धर्म ही मानती हूँ। उसका स्वतंत्र धर्म मैं नही मानती हूँ क्यो पतिव्रता को यह चाहिए कि पति उसे नहीं चाहता तब भी वह अपना भार उस पर डाले रहे।"[17]

निष्कर्ष –

लेखक के अनुसार भारतीय समाज एक पुरूष प्रधान समाज है। शासन और शोषण के आदिम खेल प्रक्रिया में नारी सदैव एक महत्वपूर्ण मोहरा रही है। समाज के शोषक पुरूष समाज ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए तरह–तरह से इस मोहरे का प्रयोग किया है। लेकिन कुछ हद तक नारी खुद अपनी इस दशा की जिम्मेदार है। इसके समर्थन में ध्रुवस्वामिनी का मत दृष्टव है – "पराधीनता की एक परंपरा–सी उनकी नस–नस में, न जाने किस युग से घुस गई है। उन्हें समझ कर भी भूल करनी पड़ती है।" यदि ध्रुवस्वामिनी की तरह आज की नारी भी अपनी रक्षा का भार स्वयं उठाने में सक्षम हो तो उसकी आधी से अधिक समस्याएं ठीक हो सकती है। अतः स्पष्ट है लेखक ने ध्रुवस्वामिनी जैसे सशक्त नारी पात्र की रचना कर नारी सशक्तिकरण की दिशा में सराहनीय कार्य किया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रन्थ –

1– पंचशील, शोध–समीक्षा, पृ0 87
2– महादेवी, श्रृखंला की कड़ियाँ, पृ0 27–28
3– आजकल, मार्च 2013, पृ0 20
4– जयशंकर प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी (संस्करण 2010), खाटू श्याम प्रकाशन, रोहतक, पृ0 15
5– वहीं, पृ0 17
6– वही, पृ0 14
7– यशपाल, बात–बात में बात, पृ0 52
8– ध्रुवस्वामिनी, पृ0 40
9– वहीं, पृ0 45
10– उषा प्रियवंदा, अन्तर्वषी, पृ0 106
11– ध्रुवस्वामिनी, पृ0 48
12– वहीं, पृ0 43
13– वही, पृ0 22
14– वही, पृ0 30
15– वहीं, पृ0 30
16– वहीं, पृ0 31
17– जैनेन्द्र कुमार, त्यागपत्र, पृ0 62

RRIJM 2015, All Rights Reserved